

इतने गुन जामें सो संत ।

श्रीमद् भागवत में कहे श्री कमला कंत ॥

हरि का भजन साध की सेवा सर्वभूत पर दाया ।

चिन्ता लोभ दम्भ सब त्यागे विश सम जाने माया ॥

सहनशील आसन उदार अति धीरज सहित विवेक ।

सत्य वचन सब के सुख दायक रहे अनन्य अतिरेक ॥

इन्द्रजीत अभिमान न जांके करे जगत को पावन ।

भगवंत रसिक संत की संगति तीनों ताप नशावन ॥